



नवविकिरण



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वर्ष 2022

41वां अंक

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

हर घर
तिरंगा



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
हरियाणा, चण्डीगढ़

भारत के उप नियंत्रक महालेखा परीक्षा का कार्यालय दौरा



नवकिरण

41वां अंक

संस्कृत की एक लाड़ली बेटी है ये हिन्दी,
बहनों को साथ लेकर चलती है ये हिन्दी,
सुंदर है, मनोरम है, मीठी है, सरल है,
ओजस्विनी है और अनूठी है ये हिन्दी,
पाथेय है, प्रवास में, परिचय का सूत्र है,
मैत्री को जोड़ने की सांकल है ये हिन्दी,
पढ़ने व पढ़ाने में सहज है सुगम है,
साहित्य का असीम सागर है ये हिन्दी,
तुलसी, कबीर, मीरा ने इसमें ही लिखा है,
कवि सूर के सागर की गागर है ये हिन्दी,
वागेश्वरी के माथे पर वरदहस्त है,
निश्चय ही वंदनीय मो-सम है ये हिन्दी,
अंग्रेजी से भी इसका कोई बैर नहीं है,
उसको भी अपने पन से लुभाती है ये हिन्दी,
यूं तो देश में कई भाषाएं और हैं,
पर राष्ट्र के माथे की बिंदी है ये हिन्दी।



सत्यमेव जयते

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
हरियाणा, चण्डीगढ़

नवकिरण हिंदी पत्रिका 41वां अंक

नवकिरण परिवार



सुश्री नाज़ली ज.शार्इन, महालेखाकार
मुख्य संरक्षक



श्री प्रवीण मौर्य, उप-महालेखाकार
संरक्षक



श्री अवनीश कुमार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
प्रधान संपादक



सुश्री पूजा सिंह मंडल, हिंदी अधिकारी
संपादक



श्री विक्रम सिंह, कनि. अनुवादक
उप संपादक



संदेश

कार्यालय की हिंदी पत्रिका “नवकिरण” के 41वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। विभागीय पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पण और निष्ठा का प्रतीक है।

हिंदी न केवल स्वावलंबन और स्वाभिमान का आधार है बल्कि यह आत्मनिर्भरता का भी सशक्त आधार है। राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पित होते हुए हम सब का संवैधानिक दायित्व है कि हम अपना कार्यालयीन कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करें, जिससे राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में वृद्धि हो सके।

हिंदी को बढ़ावा देने और उसके विकास को समर्पित “नवकिरण” पत्रिका का यह अंक भी कार्यालय के कर्मिकों के लिए कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगा। इसी आशा के साथ “नवकिरण” पत्रिका का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

“नवकिरण” पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(नाज़ली ज. शाईन)
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा,
चण्डीगढ़



संदेश

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका “नवकिरण” के 41वें अंक का प्रकाशन अपार हर्ष का विषय है। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष की धूमधाम के बीच पत्रिका का प्रकाशन हम सबको गौरवान्वित करने वाला पल है। राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास में विभागीय हिंदी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका दृष्टिगोचर होती है। साथ ही इससे कार्यालय के कार्मिकों की रचनात्मक व सृजनात्मक क्षमता का भी विकास होता है और कार्यालय के कार्मिकों को अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए भी प्रेरित करती है। इससे हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ हिंदी के प्रयोग में भी अभिवृद्धि होगी। यह राजभाषा के प्रति श्रद्धाभाव को जागृत करते हुए राष्ट्रीय प्रेम को भी उजागर करती है।

किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है। हिंदी ने अपनी मौलिकता, सरलता एवं सुबोधता के बल पर ही भारतीय संस्कृति और साहित्य को जीवंत बनाए रखा है। पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति और एकता के लिए आवश्यक है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि नवकिरण का यह अंक रचनाकारों व पाठकों को निश्चित रूप से अभिभूत करेगा। यह पत्रिका अपने बहुउद्देशीय लक्ष्यों के प्रति सदैव कृत संकल्प रहेगी तथा कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देते हुए अपनी प्रकाशन यात्रा निरंतर जारी रखेगी। पत्रिका के रचनाकारों, संपादक एवं प्रबंधक मंडल के प्रयासों की सराहना करते हुए, मैं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

भवदीय,

विशाल बंसल

(विशाल बंसल)

प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा)

हरियाणा, चण्डीगढ़



संदेश

यह हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका “नवकिरण” के 41वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं का अप्रतिम योगदान रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के वर्तमान युग में इंटरनेट पर भी हिंदी भाषा का उपयोग बढ़ रहा है। आज अनेक वेबसाइट हिंदी भाषा में उपलब्ध हैं। हम न केवल इन्हें पढ़ सकते हैं अपितु इन पर अपनी टिप्पणी भी हिंदी भाषा में सरलता एवं सहजता से दे सकते हैं। अधिकतर कार्यालयों ने भी ई-हिंदी पत्रिकाओं के माध्यम से राजभाषा हिंदी को व्यापक आयाम दिया है।

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका “नवकिरण” भी इसी दिशा में प्रयासरत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आशा है कि पत्रिका का यह अंक भी पूर्व के अंकों की भांति अधिकारियों व कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा से पूर्ण होगा। पत्रिका संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारी व कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिये मेरी शुभकामनाएं।

(वी.एस. वेंकटनाथन)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं
चण्डीगढ़



संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका “नवकिरण” के 41वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग भारतीय संस्कृति के विकास तथा राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता का परिचायक है। यह न केवल सरकारी कामकाज की भाषा है, बल्कि पूरे देश में विचारों के आदान-प्रदान का सबसे सशक्त माध्यम है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि राजभाषा को समर्पित यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के सभी कार्मिकों की रचनात्मकता में वृद्धि करेगी तथा राजभाषा के प्रति निष्ठा जगाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

होवैदा

(होवैदा अब्बास)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब, चण्डीगढ़

अनुक्रमणिका

क.सं.	विवरण	लेखक सर्व श्री/सुश्री	पृष्ठ सं.
1.	संपादक की कलम से	पूजा सिंह मंडल	09
2.	प्रतिक्रियाएं		10-16
3.	गृहमंत्री का संदेश		17-19
4.	वार्षिक कार्यक्रम		20
5.	स्वतंत्रता सेनानियों का हिन्दी के प्रति योगदान	पूजा सिंह मंडल	21-25
6.	आत्मनिर्भर भारत और हिंदी	विक्रम सिंह	26-29
7.	शुभ विचार	शिक्षा गुप्ता	30
8.	मन की बात	कुमार शर्मा 'अनिल'	31-32
9.	उडान	दरवेश राही	33
10.	गज़ल	मनजीत कौर	34
11.	मेरी बूढ़ी नानी	नीतू सिंह	35
12.	आत्मनिर्भर भारती की दिशा में हिंदी का योगदान	संदीप कुमार मान	36-39
13.	मेरी मां	लोकेश	40
14.	खुशी	राजकुमार	40
15.	वृक्ष की महत्ता	अंकित कुमार ठाकुर	41-43
16.	घर	नरेन्द्र कुमार	44
17.	दो बूंद	पंकज अरोड़ा	45

‘नवकिरण’ हिन्दी पत्रिका का विमोचन





पूजा सिंह मंडल



संपादक की कलम से

हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। हिंदी जन-आंदोलनों की भी भाषा रही है। हिंदी के महत्त्व को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा था, 'भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी'। आज वैश्वीकरण के दौर में, हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। आज पूरी दुनिया में 175 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा पढ़ाई जा रही है। भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिंदी है। हिंदी भाषा के प्रसार से पूरे देश में एकता की भावना और मजबूत होगी।

आज हिंदी हर क्षेत्र में अपनी महत्ता स्थापित कर रही है। ज्ञान-विज्ञान हो, सूचना प्रौद्योगिकी हो, सोशल मीडिया हो या इंटरनेट हो- हिंदी हर जगह अपनी अमिट छाप छोड़ रही है। पिछले कुछ वर्षों में भारत और विश्व में इंटरनेट बहुत तेजी से विकसित हुआ है। हिंदी भाषा समाचार पत्र से लेकर हिंदी ब्लॉग तक में अपनी पहचान हासिल कर रही है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार ने भी हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए अनेक पुरस्कार योजनाएं शुरू की हैं। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हिंदी में अच्छे कार्य के लिए "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना" के अंतर्गत शील्ड प्रदान की जाती है। आधुनिक ज्ञान विज्ञान की विभिन्न विधाओं एवं राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मौलिक रूप से राजभाषा हिंदी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय "राजभाषा गौरव पुरस्कार" प्रदान करता है। इन प्रोत्साहन योजनाओं से हिंदी के विस्तार को बढ़ावा मिल रहा है। यह हमारा दायित्व और कर्तव्य दोनों है कि हम अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग अपने काम-काज में करें और हिंदी को उसका यथोचित मान-सम्मान दिलाएं।

इसी क्रम नवकिरण का 41वां अंक आप सभी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है। नवकिरण पत्रिका ने एक कदम और आगे बढ़ाया है। पत्रिका में कार्यालय के कर्मिकों द्वारा रचित लेख, कहानियां, कविताएं इत्यादि के साथ कार्यालय में वर्ष भर हुए कार्यक्रमों की झाँकी भी प्रस्तुत की गई है। आशा है कि पूर्व वर्षों की भांति यह आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरेगी। पत्रिका को और अधिक पठनीय और रुचिकर बनाने में आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

पूजा सिंह

(पूजा सिंह मंडल)
हिंदी अधिकारी

प्रतिक्रियाएँ



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.



सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2022-23/15
दिनांक: 30-05-2022

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
लेखा भवन, प्लॉट नं.4 व 5, दक्षिण मार्ग,
हरियाणा, चंडीगढ़- 160 020.

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "नवकिरण" के 40 वें अंक के प्रतिभाव के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "नवकिरण" के 40 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं जानवर्धक हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, सुश्री पूजा मंडल की रचना "हिंदी की चिड़बना", श्री विक्रम सिंह की रचना "सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव", श्री कुलदीप कुमार मेहता की रचना "मैं", श्री अमित कुमार सिंघल की रचना "आतंकवाद की समस्या", श्री संजीव कुमार की रचना "टोक्यो ओलंपिक और पैरालंपिक में भारत का यादगार प्रदर्शन", सुश्री नीतू सिंह की रचना "आज का इंसान", श्री शिव वर्मा की रचना "मैं मुझे तेरी जरूरत हूँ", श्री संदीप कुमार की रचना "भारतीय संविधान से जुड़े कुछ खास तथ्य", श्री अंकित कुमार ठाकुर की रचना "दोस्ती और दोस्त", आदि रचनाएं विशेष रूप से ध्यानाकर्षित करती हैं। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर ओलंपिक विजेताओं का चित्र युवाओं के लिए बहुत ही प्रेरणादायक है। पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर कार्यालय द्वारा गणतंत्र दिवस पर ध्वजा-रोहण का चित्र भी सुंदर है, जो पत्रिका को आकर्षक बनाता है। पत्रिका में कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती हैं। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Trust in Public Interest

संख्या / No.,

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग,
कार्यालय, महानिदेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT,
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
(INFRASTRUCTURE), DELHI

दिनांक / Dated

दिनांक: 27.05.2022

सेवा में,

सुश्री पूजा सिंह मंडल (हिंदी अधिकारी)
महालेखाकार (लेखा व हक) का कार्यालय,
प्लॉट नं.4-5, सेक्टर 33 बी, दक्षिण मार्ग,
हरियाणा, चण्डीगढ़ - 160020.

विषय: हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 40वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 40वें अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है। अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। ओलंपिक विजयताओं से सुसज्जित पत्रिका का आवरण पृष्ठ अनूठा है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं सराहनीय एवं जानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में मुख्यतः सुश्री पूजा सिंह मंडल की "हिंदी की चिड़बना", श्री अनिल कुमार शर्मा की "मुजरिम", श्री संजीव कुमार की "टोक्यो ओलंपिक और पैरालंपिक में भारत का यादगार प्रदर्शन", श्री शिवा वर्मा की "मैं मुझे तेरी जरूरत हूँ", तथा श्री संदीप कुमार की "भारतीय संविधान से जुड़े कुछ खास तथ्य" आकर्षण का मुख्य केंद्र हैं। हिंदी भाषा के प्रचार एवं प्रसार हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है। 'नवकिरण' परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए 'संवाद' परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ। यह पत्र उप-निदेशक महोदय के अनुमोदन से प्रेषित किया जा रहा है।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

प्राचीय तल, ए-स्कंध, इन्द्रप्रस्थ भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110002
3rd Floor, A-Wing, Indraprastha Bhawan, I. P. Estate, New Delhi-110002
सूचना/Tele.: 011-23378473, फैक्स/Fax: 011-23378432, 011-23370871
E-mail: pdainfradl@cag.gov.in

प्रतिक्रियाएँ

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) राजस्थान, जयपुर

क्र.-राभाअ/ले.प.-1/एच-11011/के-196/प्रतिक्रिया/2018-22

दिनांक:-26/05/2022

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
हरियाणा, चण्डीगढ़, लेखा भवन, प्लॉट नं. 4 व 5,
सेक्टर 33-बी, चण्डीगढ़- 160020

विषय- हिन्दी पत्रिका “नवकिरण” के 40वें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका “नवकिरण” के 40वें अंक की सॉफ्ट कॉपी प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा एवं मुद्रण उच्च कोटि का है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्रों ने इसे और भी आकर्षक बना दिया है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ रोचक होने के साथ जानवर्धक भी हैं। विशेषकर पूजा सिंह मंडल का लेख “हिंदी की विडंबना”, श्री विक्रम सिंह का लेख “सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव”, और नीतू सिंह की कविता “आज का इंसान” विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

(अरुण कुमार शर्मा)
Welfare Officer
राजभाषा अनुभाग



सत्यमेव जयते

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर -751017 (ओडिशा)

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2022-23/19



दिनांक- 24.05.2022

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा,
लेखा भवन, प्लॉट स. 4-5, सेक्टर- 33 बी.,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160020
ईमेल- pujasinghm.har.au@cag.gov.in

विषय- हिंदी गृह पत्रिका “नवकिरण” के 40वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह ई-पत्रिका “नवकिरण” का 40वाँ (वर्ष 2021) अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	मनजीत शर्मा मीरा	दीवाली
2.	अमित कुमार सिंघल	आतंकवाद की समस्या
3.	शिवा वर्मा	मैं मुझे तेरी जरूरत हूँ
4.	पूजा सिंह मंडल	हिंदी की विडंबना

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि का बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

प्रतिक्रियाएँ



कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात), राँची
Office of the Director General of Audit (Steel)
Ranchi - 834002

File No./-/2021-22/1999

"हमारा कार्यालय हिंदी पत्राचार का स्वागत करता है।"

स. एई/हिं./रा.हिं.पत्रि./लेखा.परी.प्रकाश/समीक्षा/2021-2022/1

दिनांक:

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
हरियाणा,
चण्डीगढ़- 160020

विषय: हिंदी पत्रिका "नवकिरण" के 40 वें ई-अंक की पावती की सूचना हेतु।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय से संबंधित आपके कार्यालय के ई-मेल दिनांक- 13.05.2022 के द्वारा हिंदी गृह पत्रिका "नवकिरण" के 40 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद।

हिंदी पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा हमेशा की तरह अत्यन्त आकर्षक एवं मनोरम हैं। हिन्दी पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कहानियाँ एवं कविताएँ पठनीय, उत्कृष्ट, एवं जानकारीपूर्ण हैं। श्रीमती पूजा सिंह मंडल द्वारा लिखित आलेख - "अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस", श्री विक्रम सिंह द्वारा लिखित लेख - "सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव", तथा सुश्री नीलू सिंह द्वारा लिखित कविता- "आज का इंसान", श्री शिवा वर्मा द्वारा लिखित कविता "मां मुझे तेरी जरूरत है" एवं अन्य सभी रचनाएँ भी विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका की उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ और शुभेच्छाएँ हैं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशाQ

Ph : +91-651-2482184, 2480295,
FAX : +91-651-2480285

MECON Building, Doranda, Ranchi - 834002
E-mail : mabranchi@cag.gov.in



सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

हरियाणा,

प्लॉट नं. 5, सेक्टर 33-बी,

दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

OFFICE OF THE
PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA

PLOT NO.5, SECTOR 33-B,

DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.

संख्या: हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/प्रतिक्रिया/2022-23/27

दिनांक: 25.05.2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
हरियाणा, चण्डीगढ़।

विषय: कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'नवकिरण' के 40वें ई-अंक का प्रेषण।

महोदय,

ई-मेल द्वारा दिनांक 13.05.2022 को आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'नवकिरण' के 40वें ई-अंक की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कौटि की हैं। 'हिंदी की विडंबना', 'सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव', 'टोक्यो ओलंपिक और पेरालंपिक में भारत का यादगार प्रदर्शन', 'मुजरिम', 'मां मुझे तेरी जरूरत है' एवं 'दोस्ती और दोस्त' आदि रचनाएँ विशेष रूप से रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। रचनाओं के चयन में संपादक मंडल की कुशलता एवं साहित्यिक समझ सराहनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

प्रतिक्रियाएँ



कार्यालय प्र. महालेखाकार(लेखा व हक.) पंजाब व यू.टी. चण्डीगढ़।
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A & E), PUNJAB &
U.T. CHANDIGARH-160017
फैक्स 0172-2703110 दू.भा - 2702272,2702072
ग्रन्मांका:- हिं.क./समीक्षा/4-10/22-23/ 61
दिनांक:- 24.05.2022

सेवा में

हिंदी अधिकारी,
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
हरियाणा, चंडीगढ़।

विषय - विभागीय पत्रिका 'नवकिरण' के चालीसवें अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'नवकिरण' का नवीन अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं।

सुश्री पूजा सिंह मंडल जी की 'हिंदी की विडंबना', श्री कुलदीप कुमार मेहता की 'माँ', सुश्री मनजीत कौर की 'दीवाली', श्री शिवा वर्मा की 'माँ मुझे तेरी जरूरत है', रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय परिवार को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय

[Signature]
हिंदी अधिकारी



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL) CHENNAI



सं प्रनिलेप(के)/हिंदी अनुभाग/14-02/2022-23/ 31

दिनांक: 23.05.2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा,
चंडीगढ़- 160 020

विषय : हिंदी ई-पत्रिका "नवकिरण" के 40 अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका "नवकिरण" का 40वां अंक इस कार्यालय को ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं विशेषतः श्रीमती पूजा सिंह मंगल कृत "अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस", श्री विक्रम सिंह कृत "सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव" एवं श्री कुलदीप कुमार मेहता कृत "माँ" अत्यंत प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

भवदीय,

[Signature]
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रतिक्रियाएँ



महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड का कार्यालय OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), UTTARAKHAND

पत्रांक: 26 / हि0प्र0 / 2022-23 / विभागीय पत्रिकाएं / पावती / 564

दिनांक 13.06.2022

सेवा में

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
हरियाणा, चण्डीगढ़, प्लॉट नं० 4-5, सेक्टर 33 बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़

विषय:- हिन्दी ई-पत्रिका "नवकिरण" के 40वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका "नवकिरण" का 40 वॉ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेष रूप से सुश्री पूजा सिंह मंडल का लेख "अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस" एक दम नया सा प्रतीत होता है, श्री विक्रम सिंह का लेख "सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव" अति ज्ञानवर्धक है, श्री प्रशांत चौधरी का लेख "डिजिटल इंडिया" भी खासा महत्वपूर्ण है एवं श्री शिवा वर्मा की कविता "मां मुझे तेरी जरूरत है" भी हृदयस्पर्शी एवं मार्मिक प्रतीत होती है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रम. शर्मा
13/6/22
हिन्दी अधिकारी



भारत सरकार/GOVT. OF INDIA कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओडिशा, भुवनेश्वर - 751001 O/O THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, BHUBANESWAR - 751001

स.हिं.अ./पत्रिका.प्रति./37/2022-23/ 73

दिनांक: 16.06.2022

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले.व.ह.),
हरियाणा, चण्डीगढ़

विषय:- हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" के 40वें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदय/महोदया

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित की जाने वाली वार्षिक हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" के 40वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत ही सराहनीय है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय एवं उच्च कोटि की हैं। श्री विक्रम सिंह की रचना "सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव", श्री कुलदीप सिंह मेहता की रचना "माँ", श्री अनिल कुमार शर्मा की रचना "मुजरिम", एवं सुश्री नीतू सिंह की रचना "आज का इंसान" विशेष रूप से प्रशंसनीय है। साथ ही साथ आवरण पृष्ठ आकर्षक है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

भवदीय,

प्रम. शर्मा
13/6/22
हिन्दी अधिकारी

प्रतिक्रियाएँ

लोकहितसंस्थान
Dedicated to Truth in Public Interests

फ़ोन / Phone : 2999834/2999836
फैक्स / Fax - 0381-2350158/ 235-0423
ईमेल / Email: agautripura@cag.gov.in

सं.-स्था.(ले.प.)/हि.क./पत्रिका प्रतिक्रिया उत्तर-01/426
दिनांक:- 16-06-2022

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
महालेखाकार (लेखा व हकदारी), का कार्यालय
हरियाणा, चंडीगढ़
पिन-160020

विषय :- वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'नवकिरण' के 40वें अंक की पावती।

महोदय/महोदया,

आपके दिनांक 25.05.2022 के ई-मेल द्वारा आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 40वें अंक की अंक की ई-संस्करण की एक प्रति प्राप्त हुई। आपका बहुत-बहुत आभार। आपकी यह जनप्रिय पत्रिका अपने हर एक अंक के साथ निखरती जा रही है। आवरण पृष्ठ पर भारत के ओलिंपिक खिलाड़ियों का जीवंत छायाचित्र सकारात्मक प्रतिस्पर्धा को दर्शाता है। निःसंदेह मां ममता और स्नेह की मूरत होती है और कविता 'मैं मुझे तेरी जरूरत हूँ' में इस बातसत्य रस का बहुत सरस एवं मनमोहक वर्णन किया गया है। लेख "आज का इंसान" जीवन की विसंगतियों, खोखलेपन, पाखंड एवं सामाजिक-नैतिक मूल्यों के पतन आदि को उजागर करता है। पूजा सिंह मंडल द्वारा रचित "अंतराष्ट्रीय अनुवाद दिवस" लोगों में राजभाषा के प्रति कर्तव्यनिष्ठा को बढ़ावा देते हैं।

निश्चय ही इस पत्रिका ने आपके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभाओं की सृजन क्षमता को बढ़ाया है एवं उनमें छुपी साहित्यिक व लेखन प्रतिभा को निखारा भी है।

आपकी पत्रिका "नवकिरण" के उत्तरोत्तर प्रगति के एवं स्वर्णिम भविष्य के हेतु हार्दिक शुभकामनाएं !

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (ले व हक)
तमिलनाडु, चेन्नई-18
टेलीफोन: 044-24324530 फैक्स: 044-24320562
Website : www.agae.in, nic.in



INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E),
TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, CHENNAI-18
Phone: 044-24324530 Fax: 044-24320562
Website : www.agae.in, nic.in

हिन्दी कक्ष/हिन्दी गृह पत्रिका रिव्यू/7201/7

दिनांक 24/05/2022

सेवा में, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी / हिंदी कार्यालय महालेखाकार (ले व ह) प्लॉट सं 4-5, सेक्टर 33-बी, दक्षिण मार्ग चंडीगढ़ हरियाणा - 160017	To, Senior Audit Officer/Hindi Office of the Accountant General (A&E), Plot No.4-5, Sector 33 B, Dakshin Marg Chandigarh Haryana - 160017
--	---

विषय: आपकी हिंदी गृह पत्रिका "नवकिरण" का चालीसवाँ अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "नवकिरण" का चालीसवाँ अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं। इस अंक में प्रकाशित सुश्री पूजा सिंह मंडल का "हिन्दी की विडंबना", श्री कुलदीप कुमार मेहता की कविता "मैं", श्री अमित कुमार सिंघल का "आतंकवाद की समस्या है", श्री अनिल कुमार शर्मा का "मुजरिम" और सुश्री नीतू सिंह की कविता "आज का इंसान" विशेष रूप से उल्लेखनीय है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

(एम. सुधाकरन)
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

प्रतिक्रियाएँ



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
MEGHALAYA, SHILLONG - 793 001

फैक्स संख्या/Fax No. 0364 -2223103 ई-मेल/E-mail: agameghalaya@cag.gov.in

सं-हिंदी प्रकोष्ठ/35/पत्रिका से संबंधित सराहना/2022-23/561

दिनांक: 13/07/2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा, चण्डीगढ़

विषय:

"नवकिरण" पत्रिका की प्राप्ति से संबंधित।

महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी वार्षिक ई-पत्रिका "नवकिरण" के 40वें अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ प्रेरणात्मक एवं संरचना आकर्षक है। पत्रिका में श्रीमती पूजा सिंह मंडल द्वारा रचित "हिंदी की बिड़बना", श्री संजीव कुमार द्वारा लिखित "टोक्यो ओलंपिक और पैरालंपिक में भारत का यादगार प्रदर्शन", श्री शिवा वर्मा द्वारा रचित "माँ मुझे तेरी जरूरत है", श्री संदीप द्वारा रचित "भारत के संविधान से जुड़े खास तथ्य" रोचक, जानवर्धक एवं सुरुचिपूर्ण हैं। यह पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, इसी शुभकामना सहित आपकी पत्रिका "नवकिरण" के उज्ज्वल भविष्य हेतु "नवीन पूर्वांचल संदेश" परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया
13/07
हिंदी अधिकारी



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्यावरण

एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा

द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस,
ए.जे.सी. बॉस रोड 234/4, कोलकाता 700 700-

फोन: 2289/4111/12/13-033 फैक्स: 4060-2289-033

ई-मेल: bresdkolkata@cag.gov.in

संख्या हि.अ./1(17)21/2012-13/2021-22/168

दिनांक:-27.06.2022

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार,

(लेखा एवं हकदारी)

हरियाणा,

चण्डीगढ़- 160 017

विषय:- हिंदी पत्रिका "नवकिरण" के 40वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

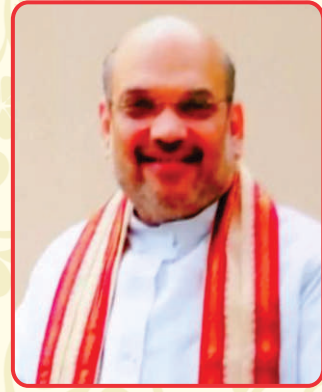
आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" के 40वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर सुश्री पूजा सिंह मंगल जी का आलेख 'अंतराष्ट्रीय अनुवाद दिवस', श्री अमित कुमार सिंघल जी का आलेख 'आतंकवाद की समस्या', श्री अंकित कुमार ठाकुर जी का आलेख 'दोस्त और दोस्ती', सुश्री नीतू सिंह जी की कविता 'आज का इंसान', और श्री शिवा वर्मा जी की कविता 'माँ मुझे तेरी जरूरत है', अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "नवकिरण" इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

भवदीया

हस्ता/-
हिन्दी अधिकारी

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो !
हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालय में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13-17 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस-2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठरथ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन-साधारण के लिए 'लीला हिंदी प्रवाह' मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी-अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई-महाशब्दकोश' में 90 हजार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई-सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हजार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी 'बृहत शब्दकोश' के निर्माण पर भी काम शुरू किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह के उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द-संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।

प्रिय देशवासियों! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश-विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!



(अमित शाह)



वार्षिक कार्यक्रम 2022-23 ANNUAL PROGRAMME 2022-23

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु निर्धारित लक्ष्य (Targets for the Implementation of Official language Policy)

1. हिन्दी में मूल पत्राचार / ईमेल- सहित(Originating Correspondence in Hindi (including E-mails)						
क क्षेत्र		ख क्षेत्र		ग क्षेत्र		
क क्षेत्र से क क्षेत्र को From A region to A region	100%	ख क्षेत्र से क क्षेत्र को From B region to A region	90%	ग क्षेत्र से क क्षेत्र को From C region to A region	55%	
क क्षेत्र से ख क्षेत्र को From A region to B region	100%	ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को From B region to B region	90%	ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को From C region to B region	55%	
क क्षेत्र से ग क्षेत्र को From A region to C region	65%	ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को From B region to C region	55%	ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को From C region to C region	55%	
क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य संघ / व्यक्ति / राज्य क्षेत्र के कार्यालय From Region A to Offices / individuals in States/UTs of A & B region	100%	ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य / / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय व्यक्तिFrom Region B to Offices / individuals in States/UTs of A & B region	90%	ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य संघ राज्य / व्यक्ति / क्षेत्र के कार्यालय From Region C to Offices / individuals in States/UTs of A & B region	55%	
	कार्य विवरण			क क्षेत्र	ख क्षेत्र	ग क्षेत्र
2.	हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में देना / Letters received in Hindi to be answered in Hindi			100%	100%	100%
3.	हिन्दी में टिप्पण / Noting in Hindi			75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम (Training programme through Hindi Medium)			70%	60%	30%
5.	हिन्दी टंकक, आशुलिपिक की भर्ती / Recruitment of Hindi Typists, Stenographers			80%	70%	40%
6.	हिन्दी में डिक्टेशन (स्वयं) की बोर्ड पर सीधे टंकण /अथवा सहायक द्वारा / (Dictation in Hindi / Direct typing on key-board (Self or by Asstt.))			65%	55%	30%
7.	हिन्दी प्रशिक्षण भाषा), टंकण, आशुलिपि / (Hindi Training ((Language, Typing, Stenography)			100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना /Preparing of Bilingual training Material			100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को खोडकर, पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ईपुस्तक-, सीडीडीवीडी/पेन ड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय / Expenditure for the purchase of Hindi books, including digital itmes i.e.Hindi e-books,CD/DVD, Pen drive & the amount incurred on Hindi translation from English & regional languages, excluding journals and standard reference books.			50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद /Purchase of all electronic equipments including computers in bilingual form			100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो/ Website bilingual			100% (द्विभाषी)		
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो / Citizen charter and display of Public interface information Board			100% (द्विभाषी)		
13.	(1) मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण / (% कार्यालयों का) Inspection of Offices located outside Headquarters (% of Offices)			25% (न्यूनतम)		
	(2) मुख्यालय / कार्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण/Inspection of sections at Hqrs./office			25% (न्यूनतम)		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें /Meetings regarding Official Language - राजभाषा कार्यान्वयन समिति/ Official Language Implementation Committee			वर्ष में 04 बैठकें / 4 Meetings in a Year (प्रति तिमाही एक बैठक/()1 Meeting every qtr)		
15.	कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया साहित्य का हिन्दी अनुवाद / Translation of Codes, Manuals, Forms, Procedural Literature			100%		
16.	कार्यालय के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिन्दी में हो Sections of the Offices where entire work to be done in Hindi			40% *	30% *	20% *
* सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों / निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, में "क" क्षेत्र में कुल कार्य-क्षेत्र का 40%, "ख" क्षेत्र में 25%, "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिन्दी में किया जाए।						



पूजा सिंह मंडल
हिन्दी अधिकारी

स्वतंत्रता सेनानियों का हिन्दी के प्रति योगदान



14 सितंबर 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। हिन्दी हमारी राजभाषा है। हिन्दी को एक प्रादेशिक भाषा से भारत की राजभाषा बनने में कई शताब्दियाँ लगी हैं। राजभाषा के रूप में हिन्दी को जो मान्यता दी गयी उसमें स्वतंत्रता-संग्राम के हमारे राजनेताओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही हैं। यह बहुत ही आश्चर्य की बात है कि हिन्दी के विकास के लिए उन चिन्तकों, मनीषियों और नेताओं ने अभूतपूर्व कार्य किया है जो अधिकतर हिन्दीतर प्रदेश के थे। बंगाल के श्री केशवचंद्र सेन, जिन्होंने 1873 में अपने पत्र 'सुलभ समाचार' (बंगला) में लिखा "यदि भाषा एक न होने पर भारतवर्ष में एकता न हो तो उसका उपाय क्या है? समस्त भारतवर्ष में एक भाषा का प्रयोग करना इसका उपाय है। इस समय भारत में जितनी भी भाषाएँ प्रचलित हैं, उनमें हिन्दी भाषा प्रायः सर्वत्र प्रचलित है। यदि हिन्दी भाषा को भारतवर्ष की एक मात्र भाषा बनाई जाए तो यह एकता शीघ्र ही प्राप्त हो सकती है।" इनके अतिरिक्त अन्य अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने प्रान्तीयता की भावना से ऊपर उठकर मुक्त कंठ से हिन्दी का समर्थन किया, जिनकी हिन्दी सेवा अविस्मरणीय रहेगी।

"स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है जिसे मैं प्राप्त करके रहूँगा" का नारा देनेवाले नेता बाल गंगाधर तिलक का स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में विशिष्ट स्थान है। भाषा के बारे में उनका विचार था कि हिन्दी ही एक मात्र भाषा है जो राष्ट्रभाषा हो सकती है। हिन्दी का समर्थन करते हुए 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' में उन्होंने लिखा था "यह आंदोलन उत्तर भारत में केवल एक सर्वमान्य लिपि के प्रचार के लिए नहीं है, यह तो उस आन्दोलन का एक अंग है जिसे मैं राष्ट्रीय आन्दोलन कहूँगा और जिसका उद्देश्य समस्त भारत वर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है।"

तिलक जहां हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानते थे वहां देवनागरी को हिन्दी की लिपि मानते थे। तिलक ने राष्ट्रीय चेतना को प्रबल करने के लिए सन् 1903 में 'हिन्द केसरी' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारंभ किया और इस बात का परिचय दिया कि जन साधारण तक अपने विचारों को पहुंचाने के लिए केवल हिन्दी ही एक सरल और सशक्त माध्यम है। साथ ही तिलक ने अंग्रेजी की बजाय हिन्दी में भाषण देने की परम्परा आरंभ कर अन्य नेताओं के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने प्रारंभ से हिन्दी को स्वतंत्रता संग्राम की भाषा बनाने के लिए अथक परिश्रम किया। उनका अनुभव था कि "पराधीनता चाहे राजनीतिक क्षेत्र की हो अथवा भाषाई क्षेत्र की, दोनों ही एक दूसरे की पूरक और पीढ़ी-दर-पीढ़ी सदा परमुखापेक्षी बनाये रखने वाली हैं" सन् 1917 में उन्होंने एक परिपत्र निकाल कर हिन्दी सीखने के कार्य का सूत्रपात किया। गांधीजी की प्रेरणा से 1925 में काँग्रेस ने यह प्रस्ताव पास किया कि काँग्रेस का, काँग्रेस की महासमिति का और कार्यकारिणी समिति का कामकाज आमतौर पर हिन्दुस्तानी में चलाया जायेगा। इसी का परिणाम था कि सन् 1925 में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन भरतपुर में हुआ जिसकी अध्यक्षता गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की और उन्होंने हिन्दी में बोलकर हिन्दी का प्रबल समर्थन किया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने विभिन्न राज्यों में हिन्दी-प्रचार करने के लिए नेताओं को जहाँ प्रेरित किया वहीं लोगों के अलग-अलग जत्थे को राज्यों में भेजा। गांधीजी के प्रयत्नों से तमिलनाडु में हिन्दी के प्रति ऐसा उत्साह प्रवाहित हुआ कि प्रांत के सभी प्रभावशाली नेता हिन्दी का समर्थन करने लगे। यह वह समय था जब चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जैसे नेता हिन्दी के प्रचार को अपना भरपूर सहयोग दे रहे थे।

'पंजाब केसरी' के नाम से प्रसिद्ध लाला लाजपतराय एक महान देशभक्त शिक्षाशास्त्री ही नहीं, एक प्रभावशाली पत्रकार भी थे। पंजाब में हिन्दी के प्रचार का पूरा श्रेय लालाजी को जाता है। जब उर्दू हिन्दी का विवाद जोरों से चल रहा था, तब लालाजी ने हिन्दी का समर्थन किया और उन्हीं के प्रयत्न से पंजाब के शिक्षा क्षेत्र में हिन्दी को स्थान मिला। उन्होंने अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की जिनमें हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य बनाया गया। लालाजी की प्रेरणा से ही पंजाब विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में हिन्दी को स्थान मिला।

स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास पुरुष के रूप में विख्यात पंडित मदनमोहन मालवीय जी का नाम हिंदी प्रचारकों में बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। वे न केवल एक महान हिंदीव्रती थे बल्कि हिंदी आंदोलन के अग्रणी नेता भी थे। हिंदी के प्रचार एवं प्रसार और हिंदी के स्वरूप निर्धारण दोनों ही दृष्टियों से उन्होंने हिंदी की अभूतपूर्व सेवा की। यह उन्हीं का प्रोत्साहन, समर्थन और प्रेरणा थी जिसकी बदौलत हिंदी प्रशासन एवं राजकाज की भाषा बनी। 'हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान' की सेवा उनका संकल्प था। उन्होंने हिन्दी साप्ताहिक 'अभ्युदय' प्रारंभ किया और 1910 में प्रयाग से 'मर्यादा' नामक हिन्दी पत्रिका

पत्रिका तथा सन् 1933 से 'सनातन धर्म' नामक हिन्दी पत्र भी प्रारंभ किया। उन्हीं की प्रेरणा से कई और हिन्दी पत्रिकाओं का जन्म हुआ।

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन की हिन्दी सेवा भी अप्रतिम है। वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कर्ताधर्ता थे और उनसे हिन्दी प्रचार के कार्य को बड़ी गति मिली। टण्डनजी ने अपना सारा जीवन हिन्दी की सेवा और हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि में अर्पित किया। हिन्दी को आगे बढ़ाने और राष्ट्रभाषा के रूप में इसे सर्वोत्तम स्थान देने के लिए टण्डन जी ने कठिन परिश्रम किया। इन्होंने 10 अक्टूबर 1910 को वाराणसी के नागरी प्रचारिणी सभा के प्रांगण में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की। फिर 1918 में उन्होंने 'हिन्दी विद्यापीठ' और 1947 में 'हिन्दी रक्षक दल' की स्थापना की। टण्डन जी हिन्दी को देश की आज़ादी के पहले आज़ादी प्राप्त करने का और आज़ादी के बाद 'आज़ादी को बनाये रखने का' साधन मानते थे। उन्होंने हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए हरसंभव प्रयास किए।

राष्ट्रीय नेताओं में देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसादजी की हिन्दी सेवा से कौन परिचित नहीं है। भारतीय संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में हिन्दी को उचित स्थान दिलाने का श्रेय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को ही है। उन्होंने ही भारतीय संविधान की भारतीय भाषाओं में परिभाषिक कोष तैयार करवाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति के पद से उन्होंने जो हिन्दी की सेवा की उसका विशेष महत्व है। उनके कार्यकाल में सरकारी स्तर पर हिन्दी को मान्यता मिली।

"यदि भारत में प्रजा का राज चलाना है, तो वह जनता की भाषा में चलाना होगा" इन शब्दों में जनता की भाषा की वकालत करने वाले काका कालेलकर जी का नाम हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार और विकास में अतुलनीय योगदान देने वालों में आदर के साथ लिया जाता है। दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार के वे कर्णधार रहे और गुजरात में रहकर हिन्दी प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाया। उन्होंने हिन्दी के प्रचार कार्यक्रम को राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में प्रतिष्ठित किया और सन् 1938 में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के अधिवेशन में इसका खुलकर ऐलान भी किया। अपने इसी लक्ष्य पर अडिग रहते हुए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन हिन्दी के विकास और प्रचार-प्रसार में लगा दिया।

श्री केशवचन्द्र सेन पहले ऐसे राष्ट्रीय नेता थे जिन्होंने 'राष्ट्रभाषा हिन्दी' के महत्व को हृदय से समझा और स्वीकार किया। साथ ही, भारत को एकता के सूत्र में बांधने की दृष्टि से सभी से यह आह्वान किया कि सब हिन्दी को आत्मसात करें क्योंकि हिन्दी हमारे देश की आत्मा है। उन्होंने हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु हर संभव प्रयास किया। उनका मानना था कि हमारा प्राथमिक उद्देश्य है अपनी बात को आखिरी व्यक्ति तक पहुँचाना और इस देश में आखिरी व्यक्ति तक संदेश पहुँचाने का सरलतम मार्ग है हिन्दी। केशव जी का मत था कि हिन्दी के माध्यम से हम किसी व्यक्ति को ही नहीं अपितु

उसकी आत्मा तक को स्पर्श करने की क्षमता रखते हैं क्योंकि हिन्दी भारत के जनसामान्य की आत्मा में बसती है।

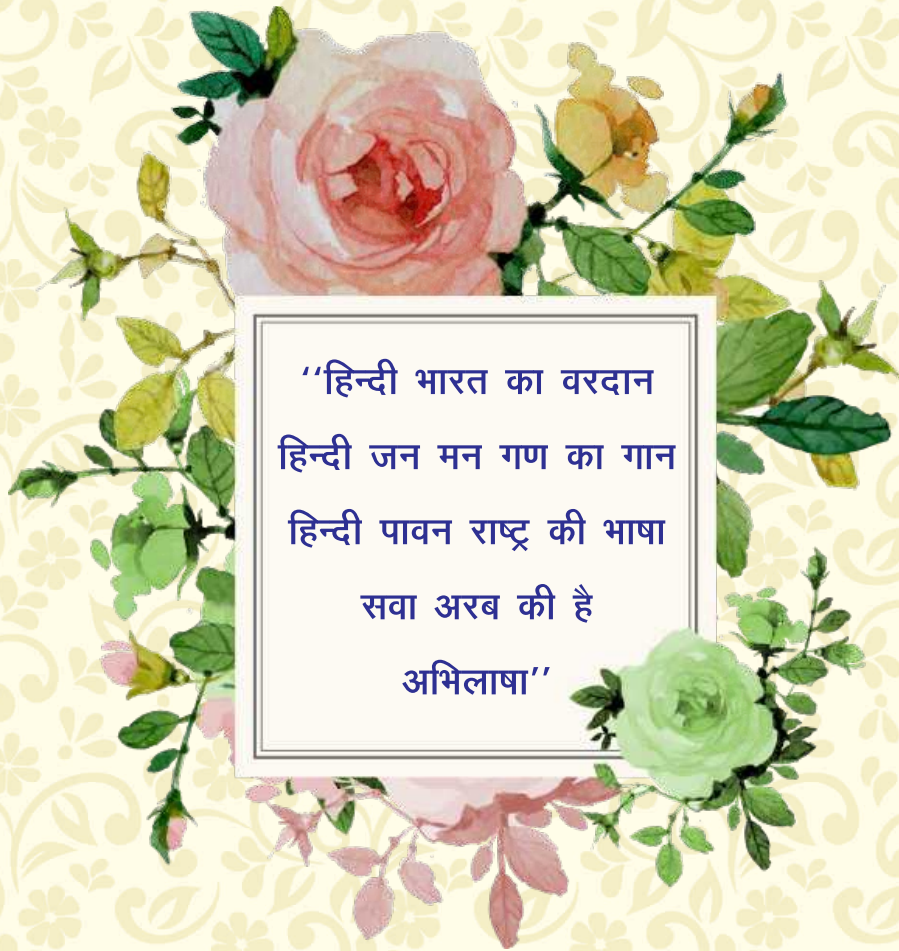
राष्ट्रभाषा के प्रहरी के रूप में सेठ गोविन्द दासजी को कौन भुला सकता है। अपने युवाकाल में ही कई हिन्दी पत्रिकाएं प्रारंभ कर सेठजी ने हिन्दी के प्रति अपने प्रेम का परिचय दिया था। 18 मई सन् 1949 में जब भारतीय संविधान सभा की बहस चल रही थी तब गोविन्द दास जी ने कहा था –“मैं व्यक्तिगत रूप से यह चाहता हूँ कि – संविधान मौलिक रूप में हमारी मुख्य भाषा में हो, अंग्रेजी में नहीं; जिससे हमारे भावी न्यायाधीश अपनी भाषा पर निर्भर हो सकें, विदेशी भाषा पर नहीं।” भारतीय लोकसभा के सदस्य के रूप में उन्होंने हिन्दी के प्रसार के लिए कई कदम उठाये जो हिन्दी को राजभाषा का स्थान दिलाने में सहायक सिद्ध हुए।

हमारे राजनेताओं के संघर्ष के फलस्वरूप 14 सितंबर 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया और संविधान का भाषा संबंधी वर्तमान भाग-17 संविधान का भाग बन गया तब डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अपने भाषण में बधाई देते हुए कहा- “आज पहली ही बार ऐसा संविधान बना है जब कि हमने अपने संविधान में एक भाषा रखी है, जो संघ के प्रशासन की भाषा होगी। इस अपूर्व अध्याय का देश के निर्माण पर बहुत प्रभाव पड़ेगा।” अपने वक्तव्य के उपसंहार में उन्होंने जो कहा वह अविस्मरणीय है। उन्होंने कहा, यह मानसिक दशा का भी प्रश्न है जिसका हमारे समस्त जीवन पर प्रभाव पड़ेगा। हम केन्द्र में जिस भाषा का प्रयोग करेंगे उससे हम एक-दूसरे के निकटतर आते जाएँगे। आखिर अंग्रेजी से हम निकटतर आए हैं, क्योंकि वह एक भाषा थी। अब उस अंग्रेजी के स्थान पर हमने एक भारतीय भाषा को अपनाया है। इससे अवश्यमेव हमारे संबंध घनिष्ठतर होंगे, विशेषतः इसलिए कि हमारी परम्पराएँ एक ही हैं, हमारी संस्कृति एक ही है और हमारी सभ्यता में सब बातें एक ही हैं। अतएव यदि हम इस सूत्र को स्वीकार नहीं करते तो परिणाम यह होता कि या तो इस देश में बहुत-सी भाषाओं का प्रयोग होता या वे प्रांत पृथक् हो जाते जो बाध्य होकर किसी भाषा विशेष को स्वीकार करना नहीं चाहते थे। हमने यथासम्भव बुद्धिमानी का कार्य किया है और मुझे हर्ष है, मुझे प्रसन्नता है और मुझे आशा है कि भावी संतति इसके लिए हमारी सराहना करेगी।

हिन्दी को राजभाषा की मंजिल तक पहुंचाने वाले कुछ प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं के योगदान का अत्यंत संक्षिप्त उल्लेख यहां किया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से महत्वपूर्ण नेताओं के नाम गिनाये जा सकते हैं, जिन्होंने हिन्दी का प्रबल समर्थन किया और हिन्दी को विकसित करने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

भारतीय संविधान के भाग 5 एवं 6 के क्रमशः अनुच्छेद 120 तथा 210 में तथा भाग 17 के अनुच्छेद 343 से 351 तक में राजभाषा हिन्दी के संबंध में प्रावधान किए गए हैं। आज हिन्दी राजभाषा के पद पर विद्यमान है। यह हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी है कि हमारे राजनेताओं द्वारा हिन्दी को दिए गए सम्मान और प्रेम का हम आदर करें तथा हर संभव प्रयास करें कि हिन्दी बहुत जल्द राजभाषा से

राष्ट्रभाषा तक का सफर तय करे। हमारे राजनेताओं ने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिलाया तो अब यह हमारा उत्तरदायित्व है कि हम उनके द्वारा चलाए गए आंदोलन को सफल बनाएं और हिन्दी को राष्ट्रभाषा के सिंहासन पर सुशोभित करें।



“हिन्दी भारत का वरदान
हिन्दी जन मन गण का गान
हिन्दी पावन राष्ट्र की भाषा
सवा अरब की है
अभिलाषा”



विक्रम सिंह
वरिष्ठ अनुवादक

आत्मनिर्भर भारत और हिंदी

अर्थव्यवस्था, अवसंरचना, प्रौद्योगिकी, गतिशील जनसांख्यिकी एवं मांग जैसे पांच महत्वपूर्ण स्तंभों पर आधारित आत्मनिर्भर भारत योजना में भाषा की एक अहम भूमिका है। शिक्षा, रोजगार, तकनीक, अर्थव्यवस्था तथा सुरक्षा जैसे विविध विषयों के विश्लेषण में हिंदी भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

देश की स्वतंत्रता के पश्चात् 14 सितंबर, 1949 को भारतीय संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के तौर पर स्वीकार किया था, तभी से संपूर्ण भारत में 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिंदी संपूर्ण देश में सामाजिक, सांस्कृतिक और भावात्मक एकता स्थापित करने का प्रमुख साधन है।

स्वतंत्रता के 74 वर्षों के बाद आज जब हम हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के संबंधों का अवलोकन करते हैं तो पाते हैं कि यह संबंध मजबूत होने की जगह निरंतर कमजोर हुए हैं। आत्मनिर्भर भारत का जो स्वप्न हमने देखना प्रारंभ किया है, उसमें आत्मविश्वास बढ़ाने में हिंदी भाषा एक निर्णायक भूमिका निभा सकती है।

हमारी भाषाएं संघर्ष की भाषाएं हैं, विशेषतः हिंदी। अपनी भाषा से विश्वास बढ़ता है, विश्वास से आत्मविश्वास और आत्मविश्वास से आत्मनिर्भरता आती है। आज के संदर्भ में यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। वैश्विक आधार पर अपने देश की उपस्थिति को और अधिक

सुदृढ़ बनाने के लिए हिंदी एवं संस्कृति की एकजुटता प्रकट करना अनिवार्य हो जाता है । आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग एवं उपयोग आवश्यक हो जाता है ।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति हेतु उस राष्ट्र की मुख्य भाषा तर्कसंगत होती है । आज विश्व के सभी विकसित एवं शक्तिशाली देश भाषा के दबदबे से विश्व शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हैं । हमारी आत्मनिर्भरता का एक पक्ष हमारी भाषाओं में छिपा हुआ होता है । देश के विकास एवं आत्मनिर्भरता की दिशा में भाषा का भी महत्व होता है । हिंदी भारत में सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली संपर्क भाषा है । यदि वैश्विक बाजार में भारत की भूमिका बढ़ेगी तो निश्चित रूप से हिंदी का दायरा भी बढ़ेगा ।

राष्ट्र आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है । जिसमें राष्ट्र भाषा, राष्ट्रगीत, राष्ट्रध्वज जैसे स्वाभिमान के प्रतीकों को प्रतिष्ठा प्रदान करने की आवश्यकता है । राष्ट्रीय अस्मिता एवं सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान को एकसूत्रता के बंधन में पिरोने वाली हिंदी को और अधिक महत्व देने की जरूरत है । हिंदी का देश की एकता और अखंडता को बनाये रखने एवं स्वतंत्रता दिलाने में बड़ा योगदान रहा है ।

हिंदी न सिर्फ स्वावलंबन और स्वाभिमान का आधार है, बल्कि यह आत्मनिर्भरता का भी एक सशक्त आधार है । हिंदी दिवस मनाते हुए हमें हिंदी के महत्व, ताकत एवं प्रतिष्ठा को समझना होगा और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के सशक्त आत्मनिर्भर-भारत के निर्माण की संकल्पना को निरंतर आगे बढ़ाना होगा ताकि 21वीं सदी के भारत का निर्माण करने की दिशा में वैश्विक पटल पर भारत को एक सशक्त राष्ट्र के रूप में स्थापित किया जा सके ।

आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सहायक घटक जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा, स्वदेशी, मेक इन इंडिया तथा डिजिटल माध्यमों का उपयोग इत्यादि को हिंदी भाषा के रूप में प्रसारित एवं प्रचारित कर सशक्त एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की संकल्पना को साकार करने में मदद मिल सकती है ।

नई शिक्षा नीति-2020 के मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा पर जोर देने की पहल से एक ऐसा मनुष्य तैयार होगा जिसे अपने सामाजिक संस्रोतों, स्थानीय ज्ञानों एवं देशज दक्षताओं पर

विश्वास होगा, जो आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में नींव के पत्थर का कार्य करेगा । नई शिक्षा नीति-2020 जिसका मूल दर्शन मूल्य, सामाजिक संवेदना, नागरिक भाव एवं दक्ष इंसान बनाने का प्रतीत होता है, द्वारा भविष्य के आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की आधारशिला धीरे-धीरे तैयार होती जाएगी ।

हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा है । वर्तमान में 637 मिलियन लोग हिंदी भाषा का उपयोग करते हैं । हिंदी भारत की राजभाषा है । हिंदी निरंतर विश्व में अपना फैलाव कर रही है । हिंदी राष्ट्रीयता की प्रतीक भाषा है, उसको राजभाषा बनाने एवं राष्ट्रीयता के प्रतीक स्वरूप स्थापित करने में भारत में उदासीनता और उपेक्षा की स्थितियां विडंबना पूर्ण हैं ।

वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठा पा रही हिंदी को देश में दबाने के जगह उपर उठाने की आवश्यकता है । हिंदी की उपेक्षा होने के कुछ राजनीतिक कारण भी हैं, जिस कारण हिंदी को वो स्थान प्राप्त नहीं हुआ है जो होना चाहिए । भारत का लोकतंत्र, प्राचीन सभ्यता एवं समृद्ध संस्कृति तथा संविधान विश्वभर में एक उच्च स्थान रखते हैं, उसी प्रकार भारत की गरिमा एवं गौरव की प्रतीक राजभाषा हिंदी को हर कीमत पर विकसित करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए । ताकि आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को बढ़ावा दिया जा सके ।

स्वतंत्र भारत के 75 वर्षों में भी हम हिंदी को उसका गरिमापूर्ण स्थान नहीं दिलवा सके हैं, यह विडंबनापूर्ण है । हिंदी को राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में स्कूलों, कॉलेजों, सरकारी कार्यालयों, अदालतों एवं निजी संस्थानों में कामकाज एवं लोकव्यवहार की भाषा के रूप में प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए । इस दिशा में वर्तमान सरकार के प्रयास सराहनीय हैं, लेकिन उन्हें और तेज करने की जरूरत है । हिंदी भाषा का मामला भावुकता का नहीं, ठोस यथार्थ का है, राष्ट्रीयता का है, आत्मनिर्भर भारत के निर्माण को साकार रूप देने का है ।

आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना, हमारे राष्ट्र की आधारशिला रखने वाले सभी स्वतंत्रता सेनानियों की आशाओं और अपेक्षाओं की अभिव्यक्ति है । स्वतंत्रता दिवस के साथ जिस आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य देश के सम्मुख रखा गया है उसका उद्देश्य भारत में उपलब्ध संसाधनों को भारत में यथासंभव उपयोग में लाना है । अन्य उपलब्ध संसाधनों के साथ-साथ भाषाई रूप से भी देश को आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना के विचार से पुष्ट करना होगा ।

हिंदी के प्रति संकीर्णता न राष्ट्र के हित में है न ही प्रांतों के हित में । राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में 'जो भरा नहीं है भावों से, जिसमें बहती रसधार नहीं ! वह हृदय नहीं पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं !' उनका यह भाव राष्ट्र को एक यथार्थ राष्ट्रीयता के दृष्टिकोण को विकसित करने एवं आत्मनिर्भर संस्कृति के रूप में प्रतिस्थापित करने पर बल देता है । महात्मा गाँधी, नेहरु, सुभाषचंद्र बोस, तिलक, लाला लाजपतराय इत्यादि जैसे विभिन्न राष्ट्रीय नेताओं एवं स्वतंत्रता सेनानियों ने भी हिंदी भाषा को आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में स्थापित करने की वकालत की ।

कोरोना के इस महासंकट से लड़ने और देश के आंतरिक स्थिति को अच्छा करने के लिए भारत ने खुद को आत्मनिर्भर भारत बनाने का फैसला किया है । आशा है कि आत्मनिर्भर भारत अभियान कोविड महामारी के संकट से लड़ने में निश्चित रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा । इस प्रकार हम देखें तो अपने परिवार से गांव, गांव से जिला और अंततः पूरे राष्ट्र को हिंदी आत्मनिर्भर बनाने में योगदान देती है । इस प्रकार हम भारत के आत्मनिर्भर देश बनने के स्वप्न को साकार रूप में देख सकते हैं ।



हिंदी है तो हैं हम
बिन हिंदी हम क्या हैं
हिंदी से बढ़ती देश की शान
इससे ही होगा हमारा सम्मान
हिंदी दिवस की बधाई

शुभ विचार

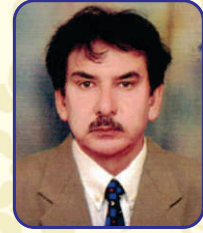


शिक्षा गुप्ता

- 1) इन्सान बिना मुहूर्त के पैदा होता है,
और बिना मुहूर्त के ही मर जाता है,
फिर सारी जिन्दगी शुभ मुहूर्त
के पीछे क्यों भगता है।
- 2) एक झूठ हमेशा,
सौ झूठ बुलवायेगा।
सच बताकर देखिए,
वही राह दिखाएगा।
- 3) मुस्कुराहट का कोई मोल नहीं होता,
रिश्ते का कोई तोल नहीं होता,
इंसान तो मिल जाते हैं हर मोड़ पर,
लेकिन हर कोई अनमोल नहीं होता।
- 4) आप क्या कर रहे हैं,
ये मायने नहीं रखता।
आप किस मन से कर रहे हैं,
ये मायने रखता है।
- 5) हौंसला और घौंसला कभी न छोड़ें,
बाकी सब ठीक हो जायेगा।
- 6) टूटे तो बनाना सीखो,
रूटे तो मनाना सीखो।
इन्हें निभाना सीखो।
- 7) सपनों की पँखुडियाँ,
तब तक नहीं खिलती
जब तक उसमें पसीने की
खुशबू नहीं मिलती।
- 8) क्षमा एक ऐसा गुण है
जो अतीत और भविष्य,
दोनों को सम्मानजनक बनाता है।
- 9) पूरे की ख्वाहिश में इंसान बहुत
कुछ खोता है,
भूल जाता है आधा चांद भी बहुत
खूबसूरत होता है।
- 10) उड़ने दो मिट्टी, कहाँ तक जाएगी।
हवा बंद होगी, तो आखिरकार
जमीन पर ही आएगी।
- 11) समय, हालात और बेबसी,
सिर्फ एक बहाना है।
निखरा वही, जिसने खुद को,
चुनौतियों में पहचाना है।
- 12) पैसों से मिली खुशी
कुछ समय के लिए रहती है लेकिन
अपनों से मिली खुशी,
जीवन भर साथ रहती है।
- 13) रिश्ते बरकार रखने की,
सिर्फ एक ही शर्त है.....
भावना देखें, संभावना नहीं।



मन की बात



कुमार शर्मा 'अनिल'

अब यह बात काफी पुरानी और लगभग एक अटल सत्य की तरह स्थापित हो चुकी थी कि प्रतिष्ठित गीतकार और काव्य में प्रेम के नए आयामों के चितरे अभिमन्यु 'अशक' से बीस वर्ष छोटी होने के बावजूद नवोदित कवयित्री अनामिका उन्हें पागलपन की हद तक इकतरफा प्रेम करती है। अनामिका द्वारा प्रेम की सार्वजनिक उद्घोषणा के बाद साहित्यिक गोष्ठियों और कॉफी हाउसों में अब चर्चा मात्र इस विषय पर होती थी कि अद्वितीय सुंदरी अनामिका क्या अपने जीवन में कभी विवाह करेगी या अभिमन्यु के प्रेम की आशा में शेष जीवन तनहा ही गुजार देगी।

वर्षों पहले जबसे कमसिन अनामिका ने प्रथम बार अभिमन्यु को काव्य पाठ करते देखा था तभी वह उन पर ऐसी मोहित हुई कि आज दस वर्ष बाद तीस वर्ष की उम्र में उसका यह प्यार पागलपन की हद तक पहुँच चुका था। इसमें अभिमन्यु की काव्य प्रतिभा के साथ-साथ उनके सुंदर व्यक्तित्व और अविवाहित होने का भी हाथ था। अनामिका के अतिरिक्त अभिमन्यु से इकतरफा प्रेम करने वाली महिलाओं की सूची बहुत बड़ी थी जिसमें अविवाहित लड़कियों के साथ-साथ विवाहित महिलाएं भी शामिल थीं। अपने शानदार मर्दाना व्यक्तित्व के बावजूद पचास वर्षीय अभिमन्यु के जीवन में ऐसी कोई महिला या लड़की नहीं थी जिसे अभिमन्यु से जोड़ा जा सके। यही कारण था कि जहाँ कुछ लोग उन्हें मर्दाना तौर पर अक्षम मानते थे वहीं कुछ लोग उनके फ्लैट पर जमे रहने वाले नवोदित कवियों से उनके प्रेमपूर्ण सम्बन्धों की वजह से उन्हें समलैंगिक मानते थे। जितने मुँह उतनी बातें थीं परन्तु अभिमन्यु ने न तो कभी किसी बात का खंडन किया और न समर्थन। कोई अति-उत्साही साक्षात्कारकर्ता यदि उनसे इस विषय में पूछता तो वे इसे निजी सवाल कह कर टाल जाते। हाँ, अनामिका के पागलपन पर वह स्पष्ट कर चुके थे कि वह उसे जानते अवश्य हैं परन्तु न तो वह उनकी मित्र है और न प्रेमिका।

अभिमन्यु और अनामिका, दोनों से ही मेरी मुलाकात साहित्यिक गोष्ठियों में होती रहती थी और अनामिका ने कई बार यह स्पष्ट किया था कि अभिमन्यु से वह असीम प्रेम करती है और मन ही मन उन्हें अपना सर्वस्व मान चुकी है।

किसी काम से मुझे एक बार शिमला जाना पड़ा तो माल रोड पर घूमते अचानक ही मेरी मुलाकात बचपन के एक दोस्त से हो गई जो दिल्ली में हमारा पड़ोसी था और अब अपने सुंदर व्यक्तित्व और कद काठी को देखते इस गलतफहमी में पाँच वर्ष से मुम्बई में धक्के खा रहा था कि अगला सुपर स्टार वही होगा। शराब-शबाब से लेकर उसके सारे शौक वही थे जो फिल्मी सितारों के होते हैं।

“कोई नई लड़की यहाँ शिमला में फाँसी?”—मैंने उसकी आदतों को देखते हुए पूछा। “पता नहीं गुरु.... मैंने फाँसी या उसने मुझे फाँसा”—वह हँसा—“कल यहीं माल रोड पर जब मैं ‘शिकार’ पर था तो खुद शिकार हो गया। कल शाम वह यहाँ मुझे मिली, रात अपने साथ होटल में ले गई, पूरी रात मनमर्जी से शिकार किया पर न अपना परिचय दिया और न मेरा पूछा। सुबह मुझे होटल से चलता कर दिया और आज जब मैं उससे मिलने दुबारा होटल पहुँचा तो मुझसे मिलने से भी इंकार कर दिया।” अपनी बात वह पूरी कर पाता इससे पहले ही मेरी नजर पास से गुजरती अनामिका पर पड़ी।

“हाय, अनामिका.....यहाँ कैसे?” उसने मुड़कर देखा तो मेरे साथ उस दोस्त को देखते उसके चेहरे पर सैकड़ों रंग आने-जाने लगे।

“अभी मैं आपके बारे में ही इनसे बात कर रहा था”—मेरा मित्र बोला—“कल यदि आप अपना परिचय दे देती तो हमें ‘सर्वनाम’ में बात नहीं करनी पड़ती।” मैं आश्चर्यचकित रह गया तो वह अनामिका थी।

अभिमन्यु पर जी-जान से फिदा..... उसके प्रेम में पागल, पूरे जीवन अविवाहित रहने की कसम खाने वाली अनामिका।

“इसने मुझे सब बता दिया है”—मैंने अनामिका की दुखती रग पकड़ने की कोशिश की। इस मौके को मैं हाथ से जाने नहीं देना चाहता था।

“अच्छा”—वह मेरी उम्मीद के विपरित मुस्कराई—“लेकिन मैं उम्मीद करती हूँ कि आप दिल्ली में किसी को कुछ नहीं बतायेंगे।”

“नहीं बताऊँगा अनामिका..... बशर्ते मेरी जिज्ञासा शांत हो जाए कि ऐसा क्यों?” मैंने सोचा था कि मेरी इस शर्त पर वह उलझ जायेगी परन्तु उसके मन में इस घटना को लेकर कोई गुत्थी नहीं थी, बल्कि मैं ही उलझा हुआ था। करीने से सुलझे हुए विचारों के धागे का एक सिरा जब उसने मुझे पकड़ाया तो मैं हैरान रह गया।

“अभिमन्यु से, उनकी प्रतिभा से मैं पागलपन की हद तक प्रेम करती हूँ, यह सच है। यह मेरे मन की, दिल की बात है कुछ-कुछ प्लैटोनिक..... और यह जो कल हुआ ये सिर्फ तन की बात थी... एक क्षणिक आवेग, उन्माद, पागलपन.....। जो उम्मीद है फिर कभी मेरे जीवन में नहीं होगा। अगर अभिमन्यु मुझे यह सब दे सकते तो मैं हरगिज ऐसा नहीं करती। कई बार जीवन में हम मन और तन के स्तर पर अलग-अलग जीते हैं..... विशेष कर हम बुद्धिजीवी..... कलाकार। ऐसा करके मैंने अभिमन्यु के प्रति अपने प्रेम, अपने संकल्प को और मजबूत किया है ताकि तन की वजह से कहीं मेरा संकल्प मेरे मन की बात झूठी न पड़ जाए। कई बार हम तन के आगे हर जाते हैं। लेकिन मेरी इस हार में ही मेरी जीत छुपी है। अगर ऐसा नहीं होता तो आपके ये मित्र मेरे मित्र होते। तन और मन के इस द्वंद में कल पूरी रात तन ही परास्त हुआ है। अभिमन्यु के प्रति मेरे मन में जो प्रेम है, वह कितना मजबूत है इसे मेरा तन भी इस दौरान समझ चुका है।” उसके मन की बात अब मैं समझ चुका था।



भाषा जन जन की हिन्दी भाषा,
जनसमूह की आशा हिंदी भाषा,
सबको जोड़े है हिंदी भाषा,
एक दूजे से मिलाती भाषा हिंदी भाषा

उड़ान



राही दरवेश

आज लड़ोगे.... तभी तो कल आगे बढ़ोगे।
गर डाल दिए हथियार तो क्या खाक उड़ान भरोगे।।
हाँ, अगर जूझने से डरते हो तो जहाँ हो.... ठीक हो,
बेगैरत सी ज़िंदगी जिया..... जियो सुबह-शाम भीख लो,
गर नहीं...
तो उठ और लक्ष्य की ओर चल...
गिर, फिसल... पर डरना नहीं है।
जो होगा, देखा जाएगा...
ना जूझने से तो... लड़कर गिरना सही है।।
ना डरा... ना डर जरा संभल... और घर से निकल।
ना सोच कि सफल होगा कि असफल।।
ये सब तू छोड़ और मेहनत पर ध्यान दे...
जो हासिल होगा, वो देख ही लेगा कल।।
तू चल... घर से निकल...
किसी की परवाह न कर....
ख्वाबों का जो दरिया है, कूद जा और पार कर...
हौंसला ना छोड़... खुद पर ऐतबार कर...
एक बार नहीं... हर बार कर...
जो तू हासिल कर सकता है... करके दिखा।
ख्वाबों को पाना क्या होता है... सबको बता।।
पता है तनाव है और दबाव भी....
इन सबके बीच तू मंद मंद मुस्कुरा।।
हर पल को जी और आगे बढ़ता जा...
कभी थकना नहीं, बस तू लड़ता जा...
बुलंदियों के पायदान पर चढ़ता जा...
बढ़ता जा... बस 'राही' आगे बढ़ता जा...





मनजीत शर्मा 'मीरा'

गज़ल



राह-ए-उल्फ़त है पुर-ख़तर साहिब
 सोचकर करना तुम सफ़र साहिब
 आप आए हुई सफ़र साहिब
 थी ज़िया वरना दूर-तर साहिब
 मैं नहीं करती प्यार का सौदा
 क्या नफ़ा और क्या ज़रर साहिब
 उसकी आँखों में बस सियासत थी
 मैं ये समझी कि है ख़िज़र साहिब
 मत समझ आशिकी को मामूली
 दिल तो दिल जान का भी डर साहिब
 क्या हुआ हम मरे हैं शाम-ओ-सहर
 इश्क़ तो हो गया अमर साहिब
 दूर रहना सदा रकीबों से
 लग न जाए कहीं नज़र साहिब
 साथ देते जो राह-ए-उल्फ़त में
 आप ही होते हमसफ़र साहिब
 आपने तो की दिल्लगी लेकिन
 मेरे दिल पर हुआ असर साहिब
 जुर्म-ए-उल्फ़त की सजा दे मुझको
 हर ख़ता कर दे दरगुज़र साहिब
 रोशनी प्यार की नहीं हो अगर
 शम्स क्या और क्या कमर साहिब
 कैसे पाऊँ मैं प्यार की मंज़िल
 कर रहे हैं अगर-मगर साहिब
 लोग 'मीरा' को लाख तंज़ करें
 वो तुम्हारी है सर-ब-सर साहिब



मेरी बूढ़ी नानी



नीतू सिंह

आँखें धंस गई है वक्त की मार से
चेहरे पर झुर्रियों का जाल है
धुंधलाई नज़रों से दूँढती है
चेहरों को.....
मेरी बूढ़ी नानी

80 की उम्र में भी
वही वात्सल्य वही प्रेम
छलकता है उनके कांपते
हाथों की छुअन से
उंगलियों से टटोल कर,
पहचानती है मेरी बूढ़ी नानी

बचपन की वो कहानियां
कुछ मनगढ़ंत कुछ वास्तविक
अक्सर रात को कान लगाकर
सुनते थे हम परिलोक की कथाएं
राजा-रानी की गाथाएं
रीति रिवाजों-संस्कारों में गढ़े
किस्से सुनाती मेरी बूढ़ी नानी

नानी का घर जो होता था
गर्मी की छुट्टियों का ठिकाना
खूब शरारत करना
नानी को थकाना
बेटा अगले बरस फिर आना
वापसी पर रो-रोकर
कहती थी
मेरी बूढ़ी नानी

कुछ याद नहीं रहता उन्हें अब
भूल जाने की आदत हो गई है
श्रवण शक्ति भी साथ नहीं देती
फिर भी होठों को हिलाने से
सब समझ जाती है
मेरी बूढ़ी नानी

धूल जम गई है
उनकी यादों पर
शुष्क आंखों में बची है
कई अनकही बातें
डरता है मन उनके बिछोह से
क्या हमें यूँही छोड़ जाएगी
.....मेरी बूढ़ी नानी





संदीप कुमार मान
डी.ई.ओ.

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में हिंदी का योगदान

हिंदी कवि 'भारतेंदु हरिश्चन्द्र' ने कहा था -

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

किन्तु निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हियै को मूल" ॥

अर्थात् अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल आधार है। इसी से सर्वांगीण विकास हो सकता है। हिंदी को हमारे देश के संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार 14 सितम्बर 1949 को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया गया है। इसीलिए 14 सितम्बर को हम 'हिंदी-दिवस' के रूप में मनाते हैं।

प्राचीन काल से ही हमारा भारत देश सोने की चिड़िया कहलाने के साथ-साथ आत्मनिर्भर भी रहा है। आत्मनिर्भर का अर्थ है - स्वयं पर निर्भर होना अर्थात् खुद को किसी और पर आश्रित न करना। अतः आत्मनिर्भरता का सही अर्थ है - किसी कार्य विशेष के लिए दूसरों पर निर्भर न रहना।

"आत्मनिर्भर बनाओ खुद को भविष्य के लिए तैयार करो ।

हिंदी है मातृतुल्य हमारी तुम इसका सम्मान करो" ॥

शास्त्रों में कहा गया है कि "सर्व परवंश दुख सर्वमात्मवंश सुखम्" अर्थात् सब तरह से दूसरों पर निर्भर रहना ही दुख है एवं सब प्रकार से आत्मनिर्भर होना ही सुख है। एक व्यक्ति का सबसे बड़ा गुण होता है - 'आत्मनिर्भरता'। अतः आत्मनिर्भर भारत बनाने के सपने को साकार करने हेतु सभी नागरिकों का देश के नीति-निर्माण में सहभागी होना आवश्यक है और

जनभागीदारी हेतु आवश्यक है कि सभी नागरिकों का आपस में जुड़ाव महसूस होना। इस जुड़ाव का मूल आधार हमारी मातृभाषा हिंदी के अलावा कुछ और हो ही नहीं सकता।

हिंदी भाषा भारत की सबसे प्रमुख भाषाओं में से एक है। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। भारत में रहने वाले सभी लोग एक भाषा नहीं जानते इसलिए भारत में आपको किसी से भी बात करनी हो या फिर संवाद करना हो तो आपको पहले हिंदी का ज्ञान होना ही चाहिए। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसकी मदद से हम अपनी बातों के साथ-साथ भावनाओं एवं संवेदनाओं को भी बहुत ही सरल तरीके से व्यक्त कर पाते हैं।

भाषा देश की एकता, अखण्डता तथा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाना है तो एक भाषा होनी चाहिए। लोगों में हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता फैलाने की जरूरत है। बिना हिंदी के विकास के भारत का विकास होना असंभव सा है और बिना विकास किए कोई भी देश आत्मनिर्भर नहीं बन सकता है। अतः भारत को आत्मनिर्भर बनाने में हिंदी की अहम भूमिका है।

“भारत बनेगा आत्मनिर्भर और खुशहाल,

जब हिंदी भाषा का प्रयोग होगा विस्तृत और विशाल”

भारत 'वसुधैव कुटुंबकम्' की संकल्पना में विश्वास करता है। चूंकि भारत दुनिया का ही एक हिस्सा है अतः भारत प्रगति करता है तो ऐसा करके वह दुनिया की प्रगति में भी योगदान देता है। देश को समृद्ध व सुखी बनाने के लिए तथा कोरोना महामारी का मुकाबला करने के लिए भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 12 मई 2020 को 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' योजना शुरू करने की घोषणा की। जिसका उद्देश्य देश की अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करना है।

आत्मनिर्भर भारत के 5 प्रमुख स्तंभ

- | | |
|----------------------|--|
| ➤ अर्थव्यवस्था | - वृद्धि दर को तीव्र करना |
| ➤ माँग | - माँग एवं आपूर्ति श्रृंखला की क्षमता का उपयोग |
| ➤ गतिशील जनसांख्यिकी | - भारत के लिए ऊर्जा का स्रोत |

➤ प्रौद्योगिकी

- प्रौद्योगिकी संचालित व्यवस्था पर आधारित

➤ अवसंरचना

- आधुनिक भारत का आधार

आत्मनिर्भर भारत अभियान में मुख्यतः 4 बातों पर ध्यान दिया जा रहा है - लैंड, लेबर, लिक्विडिटी एवं लॉ। सरकार द्वारा आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की दिशा में 10 क्षेत्रों की पहचान की गई है जिसकी सहायता से घरेलू उत्पादन को बढ़ावा दिया जाएगा। इन क्षेत्रों में आयात कटौती पर भी निर्णय लिया गया है। जिसमें फर्नीचर, मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी व पूंजीगत वस्तुएँ आदि शामिल हैं।

कोविड-19 के दौर में भारतीय अर्थव्यवस्था में निरंतर गिरावट दर्ज की गई। पिछले वर्षों 2020-21 की पहली तिमाही में जी.डी.पी. में 23.9% की कमी आंकी गई। तथा राजकोषीय घाटा अपने लक्ष्य 3.5% से बढ़कर 8.6% तक पहुँच गया। बेरोजगारी दर अपने पिछले 45 वर्षों के उच्चतम स्तर पर दर्ज की गई। इन्हीं सब परिस्थितियों से निपटने के लिए भारत सरकार द्वारा आत्मनिर्भर भारत योजना के तहत 20 लाख करोड़ रुपये की वित्तीय पैकेज की घोषणा की गई जो भारत की जी.डी.पी. का 10% है। इसके अंतर्गत वित्तीय पैकेज के साथ-साथ कुटीर उद्योग एम.एस.एम.ई., मजदूरों, मध्यम वर्ग, उद्योगों तथा विभिन्न वर्गों की जरूरतों को पूरा करने पर बल दिया गया। कोरोना महामारी के कारण देश में जो परिस्थितियाँ आयी हैं उनको देखते हुए भारत के प्रधानमंत्री ने देश को आत्मनिर्भर बनाने का आह्वान किया है। उन्होंने 'लोकल फॉर वोकल' का नारा दिया। जिसका अर्थ है कि लोकल में बनी वस्तुओं का उपयोग और उनका प्रचार करना और एक पहचान के रूप में आगे बढ़ना।

यदि हमारा भारत आत्मनिर्भर बनता है तो देश को इससे कई सारे फायदे होंगे जो लोगों और देश की तरक्की में बहुत सहायक होंगे।

- आत्मनिर्भर भारत में हमारे देश में उद्योगों की संख्या में वृद्धि होगी।
- हमारे देश को अन्य देशों से कम सहायता लेनी पड़ेगी।
- देश में रोजगार के अधिक अवसर पैदा होंगे।
- इससे देश में बेरोजगारी के साथ-साथ गरीबी से मुक्ति में भी सहायता मिलेगी।
- भारत की आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकेगी।
- देश आगे चलकर अन्य देशों से आयात कम और निर्यात अधिक कर सकेगा।
- देश में स्वदेशी वस्तुओं का निर्माण कर देश की तरक्की को शीर्ष तक ले जाने में सहायता मिलेगी।

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में हिंदी का अहम् योगदान है। किसी भी देश के विकास में उस देश की राष्ट्रभाषा एक अहम व महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः हिंदी भाषा ने भी भारत के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में एक अहम योगदान दिया है। वह हिंदी ही है जिसने हमें हमारी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं हमारे संस्कारों को साथ लेकर आधुनिक प्रगति की राह पर हमें चलना सिखाया है।

भारत सरकार द्वारा विकास योजनाएं तथा नागरिक सेवाएँ हिंदी में प्रदान की जा रही हैं। जिससे बेहतर जन सुविधाएं लोगों तक पहुँचाई जा सके। सभी योजनाओं की जानकारी आम नागरिकों को हिंदी में मिलने से गरीब, पिछड़े और कमजोर वर्ग के लोग भी लाभान्वित होते हुए देश की मुख्य धारा से जुड़ रहे हैं। देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सभी वर्गों को एक साथ लेकर चलना बहुत जरूरी है। हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। हिंदी हमारी राजभाषा है। यह हमारे अस्तित्व, अस्मिता, राष्ट्रीयता एवं संस्कृति की भी प्रतीक है। आधुनिक तकनीकी के युग में मोबाइल, स्मार्टफोन, टी.वी., समाचार-पत्र आदि के माध्यम से हिंदी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है जिससे सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक विकास भी बढ़ रहा है एवं आम आदमी भी इसका प्रयोग अधिकाधिक कर रहा है जिससे जनसाधारण के सर्वांगीण विकास में वृद्धि हो रही है।

अपनी भाषा को छोड़कर अन्य भाषाओं के प्रयोग से हम आत्मनिर्भर नहीं बन सकते, आश्रित ही रह जाएँगे। वह उपलब्धि ही क्या जिसका वर्णन करने के लिए किसी और भाषा की जरूरत पड़े। संस्कृत में भी कहा गया है:- “मातृभाषा परिव्यज्य येजन्यभाषामुपासते तत्र यान्ति हि ते यत्र सूर्यो न भासते” अर्थात् जो अपनी मातृभाषा का परित्याग करके किसी और भाषा की उपासना करता है, वह अंधकार के उस गर्त में जा पहुँचता है, जहाँ सूर्य का प्रकाश भी नहीं पहुँचता है। अतः हम कह सकते हैं:-

“सारे जहाँ का गौरव है हिंदी,
जन-जन का विकास है हिंदी।
हमारी संस्कृति की पहचान है हिंदी,
हमारे आत्मनिर्भर भारत का सम्मान है हिंदी”॥

जय हिंद !

जय हिंदी !

मेरी माँ



लोकेश

मेरी मां का प्यार था जग से निराला,
बेटा-बेटा कह कर मां ने इतना प्यार डाला।
मैं भी था अपनी मां की आँख का तारा,
और मां ने ही समाज में बैठने लायक हमें उतारा।
अच्छे बुरे की पहचान करवाती मां,
दुनियाँ से लड़ना सिखाती मां।
जो भी मां को सतायेगा,
वो दुनिया में कभी खुश नहीं रह पायेगा।
मां कितनी भी दुःखी हो, लेकिन हमें खुश रखती है,
खुद भूखा रहकर, हमारा पेट भरती है।
मैं जब भी इस धरती पर आऊँ,
अपनी मां की गोद ही पाऊँ।



खुशी



राज कुमार

सूखे-सूखे खेतों में बरस रही है,
बिखरते ही धरती पर नाच रही हैं बूंदें।

पहली बूंद जब टकराई,
किसान के मुख पर रौनक आई।

नम आंखों ने खेली होली,
खुशियों से भर गई है झोली।

मौसम ने अब ली अंगड़ाई,
घर आंगन में खुशियां छाई।

आओ मिल कर नाचें गाएँ,
पेड़ लगाकर खुशी मनाएँ



वृक्ष की महत्ता



अंकित कुमार ठाकुर

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक मनुष्य ने अतीव उन्नति की है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक वैज्ञानिक सुपरसोनिक युग तक मनुष्य ने सफलता एवं विकास के ना जाने कितने, अनगिनत पायदान चढ़े हैं। यहाँ तक की आज का मनुष्य इस जीवनदायिनी वसुंधरा को त्याग कर चाँद एवं मंगल पर जीवन की संभावनाएं तलाश वहां स्थायी रूप से बस जाने का विचार कर रहा है। उनके इस विचार के पीछे प्रमुख कारण है-पृथ्वी पर बढ़ती प्रदूषण की समस्या। वस्तुतः यह समस्या भी स्वयं मनुष्य की ही देन है। वह अपना विकास करने के स्वार्थ लोलुपता में इतना अंधा हो गया कि उसने प्राकृतिक संसाधनों का यथाशक्ति दोहन करना शुरू कर दिया और यह बदस्तूर जारी ही है।

हम सभी जानते हैं जब जब प्रकृति में हास होता है प्रकृति इसकी क्षति-पूर्ति अपने प्रचंड रूप में करती है। ऐसे में वृक्षारोपण ही एक मात्र उपाय बच पाता है जिसमें पर्यावरण संतुलन के बहुआयामी गुण विद्यमान हैं। “वृक्षारोपण की महत्ता” ना सिर्फ विचार, गोष्ठी, चर्चा-परिचर्चा एवं प्रतियोगिता का विषय बनना चाहिए बल्कि जन-जागरूकता द्वारा भूतल पर कर्तव्यनिष्ठता के पटल पर अमल लाने योग्य भी होना चाहिए ताकि ना सिर्फ वर्तमान ही नहीं बल्कि भविष्य में आने वाली पीढ़ी के लिए भी जीवन संभाव्य माकूल पर्यावरण बन सके। और यह वसुंधरा वैसी ही हरी-भरी रह सके जो इसकी अद्वितीय विशेषता है।

“वृक्षारोपण की महत्ता” जैसी संवेदनशील विषय पर अपने विचार अभिव्यक्त करने का सीधा सम्बन्ध पर्यावरण चेतना से है। और इस चेतना का अभिप्राय अपने आस-पास के वातावरण की सुधि होने एवं उनकी सुधि लेने से है।

वैसे भारत के निवासियों के लिए ये कोई नयी बात नहीं है भारत में प्रकृति अपना अहसास अनायास की करा देती है और प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाये बिना, कुदरत के साथ तारतम्यता बिठाये बिना, जिन्दा रहने की कोई तरकीब, कोई तरीका काम नहीं करता भारत-वर्ष के लोग ये बात रियो-डी-जेनेरो के सम्मलेन और स्टॉकहोम के कन्वेंशन से बहुत पहले समझ चुके हैं। यही कारण है कि हमारे यहाँ परम्पराओं में, संस्कृतियों में, सभ्यताओं में प्रकृति का विशिष्ट स्थान रहा है जिनमें वृक्ष की महिमा-मंडन प्रमुखता से उभरकर प्रतीत होती है। निःसंदेह पेड़-पौधों के महत्व को कभी भी कमतर नहीं आँका जा सकता, क्योंकि ये हमारे जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

तभी तो भारतीय संस्कृति वृक्ष पूजक संस्कृति रही है। वृक्षों में देवत्व की अवधारणा और इसकी पूजा-अर्चना की परंपरा हमारे देश में चीर-प्राचीन काल से रही है। भागवत में वृक्षों को समर्पित एक श्लोक है-

मूल ब्रह्मा, त्वचा विष्णु, शाखा रुद्रोमाहेश्वरः।

पत्रे-पत्रे च देवानाम्, वृक्षराज नमोस्तुतेः॥

अर्थात् मैं वृक्ष की पूजा-अर्चना करता हूँ, जिसके मूल में ब्रह्मा, छाल में विष्णु, शाखाओं में भगवान शिव वास करते हैं और जिनकी पत्तियों में इश्वर का वास है यानि जिनका हर भाग पूजनीय है। वृक्षों के प्रति

ऐसा प्रेम शायद ही किसी देश की संस्कृति में हो जहाँ वृक्ष को मनुष्यों से भी ऊँचा स्थान दिया गया है। यह हमारी गौरवशाली संस्कृति ही है जहाँ पेड़-पौधों को पुत्रों से भी बढ़कर मानने की प्रथा विद्यमान है। मत्स्य पुराण में एक श्लोक है-

दश कूप समावापी, दस वासी समोद्दिदः।

दस हृद समः पुत्रो, दस पुत्र समो द्रुमः ॥

अर्थात् दस कुओं के बराबर एक बावड़ी, दस बावड़ियाँ के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है।

ऐसे में हमें आभास होता है कि वृक्ष की महत्ता पर जितने भी बोले या लिखे जाएँ कमतर ही सिद्ध होगा क्योंकि वृक्ष के बिना जीवन असंभव है।

मानव जीवन की शुरुआत ही वृक्षों पर निर्भर करती है। जब से मानव चेतना का प्रादुर्भाव हुआ वे वृक्ष की इस महत्ता को भलीभांति समझने लगे। तभी तो प्रागैतिहासिक काल के आदिमानव से लेकर नव-पाषाण युगी लोग हो या सिन्धुघाटी सभ्यता के नागरीय लोग, वैदिक काल के ऋषि-मुनि हो या उत्तरवैदिक राजा-महाराजा, बौद्ध धर्म के अनुयायी हों या जैन आराधक, हिन्दू पूजक हों या लोक कल्याणकारी सिक्ख, मुस्लिम धर्मावलम्बी हों या इसाई प्रचारक या फिर आज के वैज्ञानिक युग के तथाकथित ज्ञानी मानव हों सबने वृक्ष की अलौकिक महत्ता को भली-भांति स्वीकार किया है। सभी धर्म संप्रदाय वृक्ष को प्रकृति में सर्वोपरि स्वीकार किया है। धार्मिक नजरिये से देखा जाये तो सभी धर्म लोककल्याण को ही धर्म-पूजा की संज्ञा देते हैं और लोक-कल्याण की यथार्थता वृक्षों के मामले में अपनी पराकाष्ठा के चरमोत्कर्ष पर सुशोभित है। इस क्रम में बरबस ही एक श्लोक याद आ जाता है जो हमें बचपन में पढ़ाया जाता था-

अहो एषां वर जन्म सर्वप्राणयुपजीवनम्।

सुजनस्येव धन्य मही रुहा येभ्यो निराशा यन्ति नार्थिनः ॥

अर्थात् समस्त प्राणियों को जीवन प्रदान करने वाले इस वृक्षों का जन्म कितना उत्तम है, कितने धन्य हैं ये वृक्ष जिनके पास से कोई याचक निराश नहीं लौटता। वृक्ष कुछ न कुछ प्रदान करके ही सभी को वापस भेजता है।

यह वृक्ष ही है जिससे मानव जगत को प्राणवायु मिलती है, यह वही वृक्ष ही है जिससे जीव-जंतु को भोजन की प्राप्ति भी होती है। यह वृक्ष ही है जिसके नीचे सभ्यता के विकास का बीजारोपण हुआ तो कहीं मानवीय चेतना जागृत हुई। इसी वृक्ष के नीचे रामायण लिखी गई तो इसी वृक्ष के नीचे ही महात्मा बुद्ध को बौद्धत्व का एवं जैन तीर्थकरों को कैवल्य की प्राप्ति हुई। इसी वृक्ष के नीचे गुरु नानक ने सिक्ख धर्म का उपदेश दिया तो इसी वृक्ष के नीचे रहीम, कबीर, तुलसीदास जैसे और ना जाने कितने साधू-महात्माओं का अविर्भाव हुआ। यह वह वृक्ष ही है जो कहीं तो हमें हमारा इतिहास बताती है तो कहीं समय आने पर हमें हमारा भूगोल। यह वृक्ष ही है जो आहार पिरामिड की शुरुआत करती है तो कभी जीवन चक्र की। ऐसे में वृक्ष के बिना जीवन की कल्पना करना भी असंभव मात्र प्रतीत होती है। आइये अब हम थोड़ा वर्तमान वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में चर्चा करते हैं अगर गौर से देखा जाये तो वृक्ष जड़ से लेकर पत्ती तक हमेशा से लाभदायक रहा है। विज्ञान की आधारशिला ही वृक्षों पर आश्रित है। वो चाहे वायु-चक्र हो, जल-चक्र हो, आहार श्रृंखला हो या पारिस्थितिक तंत्र हो सभी जगहों पर वृक्ष अपनी महती भूमिका समेटे प्रथम पायदान पर काबिज है। वृक्ष से हमें क्या कुछ नहीं मिलता है-जीवों द्वारा छोड़े गए कार्बन-डाइ-ऑक्साइड गैस को प्राण वायु ऑक्सीजन में परिवर्तित कर देता है। इनकी पत्तियों, छालों एवं जड़ों से हम विभिन्न प्रकार के औषधियां बनाते हैं। इनसे हमें रसदार एवं स्वादिष्ट फल मिलते हैं। वृक्ष हमें छाया प्रदान करते हैं। जहाँ वृक्ष

पर्याप्त मात्रा में होते हैं वहां वर्षा की मात्रा भी संतुलित रहती है। वृक्षों की कमी कहीं सूखे का कारण बनती है तो कहीं भू-स्खलन का तो वही कहीं बाढ़ की प्रचंड विभीषिका का। वृक्ष से पर्यावरण संतुलन बना रहता है। इनसे प्राप्त लकड़ियों से भवन-निर्माण एवं फर्नीचर बनायी जाती है। वस्तुतः हम गौर से देखें तो हम पाते हैं की मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु उपरांत तक कहीं न कहीं वृक्षों एवं उनसे प्राप्त होने वाले विभिन्न प्रकार के वस्तुओं पर निर्भर रहते हैं।

आज पूरी दुनिया एक गंभीर समस्या से जूझ रही है वो है वैश्विक तापन या ग्लोबल वार्मिंग ये समस्या औद्योगिकीकरण के कारण उत्सर्जित हुए हरित गृह गैस यथा CO, CFC, मीथेन, सल्फर, नाइट्रोजन और कार्बन-डाइ-ऑक्साइड इत्यादि जो पृथ्वी के वायुमंडल में एक छातारूपी अभेद्य आवरण बनाते हैं। जब सूर्य की अवरक्त किरणें पृथ्वी पर आती हैं तो वापस लौटते समय ये आवरण के कारण बहुत सारी गैस बाहर नहीं निकल पाती है और वैश्विक तापन का कारण बनती है। जिस कारण पर्यावरण में आये दिन अप्रत्याशित उतार-चढ़ाव देखने को मिलता है फलस्वरूप ध्रुवों पर जमी हिम-ग्लेशियरों का पिघलना बदस्तूर जारी है और यही पिघला हुआ पानी धरा पर बाढ़ का प्रचंड रूप धारण करती है जिसका दंश हम मानव झेलते हैं।

कवि जयशंकर प्रसाद जी बाढ़ की विभीषिका का वर्णन इस सन्दर्भ में कुछ इस प्रकार करते हैं-

“हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छांह,
एक पुरुष भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह
नीचे जल था, उपर हिम था, एक तरल था, एक सघन
एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन।”

ऐसे में हमें वृक्षारोपण की अकाट्य महत्ता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। विकास के नित नए पायदान चढ़ना बेशक अच्छी बात है परन्तु इसके नाम पर प्रकृति से छेड़-छाड़ उतनी ही भयानक। हमने विकास के साथ-साथ उस अनुपात में वृक्षारोपण की ओर ध्यान ही नहीं दिया जिस कारण इस वसुंधरा पर जीवन अस्तित्व ही खतरे में आ गई है। अभी कुछ समय पहले की ही बात है कोरोना महामारी के दौर में हम सभी ऑक्सीजन सिलिंडर को लेकर त्राहिमाम थे ऐसे में हमें भली-भांति यह अवलोकित करनी ही पड़ेगी की अभी तो यह कोरोना प्रायोजित समस्या थी, कहीं सच में एक दिन ऐसा न आ जाये जब हम प्राकृतिक ऑक्सीजन के बिना मर रहे हों? अतः हमें वृक्षारोपण को कर्तव्यनिष्ठ होकर यथार्थता के पटल पर लाना ही होगा, अमल में लाना ही होगा, हमें वृक्ष लगाना ही होगा।

तो आइये आज एक संकल्प लेते हैं की अब से हम यथासंभव वृक्षारोपण करेंगे वो चाहे जन्मदिवस हों, कोई त्यौहार हों, कोई उत्सव हों या ऐसे ही संयोगवश कोई आम या खास दिन हो हम कम से कम एक-एक पेड़ जरूर लगायेंगे एवं दृढसंकल्पित होकर आत्मार्पित करते हैं कि उस लगाये पेड़ की अपने परिवार के सदस्य, अपने बच्चे, अपने भविष्य की तरह देखभाल करेंगे।

यकीन मानिये, अगर यह मानव चेतना का प्रस्फुटन हम सभी में हो गई तो यह धरा कभी-भी प्राकृतिक प्रलय का दंश नहीं झेलेगी या उसकी प्रचंडता नगण्य होगी, फिर चाहे हम कितने ही विकसित हो जाएँ और कितने ही औद्योगिक वयूँ न हो जाएँ। फलस्वरूप पर्यावरण से लेकर पारिस्थितिकी तक सभी संतुलित रहेंगे।

धन्यवाद ।।



घर



नरेन्द्र कुमार

मैं अक्सर एक राग गुनगुनाता था,
और बड़ी ही गहरी धुन में गाता था,
मुझे एक जिंदगी बितानी है,
एक प्यारा सा घर बनाने में।

मजा बड़ा आयेगा,
वो सपनों की,
चार दीवारें बनाने में,
खुश था मैं बहुत,
अपने इस तराने में।

आखिर वो दिन आ ही गया,
सपनों को मेरे पंख लग ही गया,
कुछ पैसे जोड़ लिए मैंने,
कुछ उधार उठाई जमाने से।

कमर टूट चुकी,
पसीने से शरीर ठण्डा पड़ गया,
और बहुत वक्त बीत गया,
इस घर को बनाने में।

चल अब कोई दरख्त देखूँ,
जिसकी छाँव मुझे,
माँ के आँचल सी लगे,
समझ छाँव को पल्लू माँ का,
मैं गहरी नींद में खो गया,

आँख लगी एक सपना आया,
उसमें मुझे माँ ने समझाया,
खुद को भुला दिया है। तुमने,
बस इतना-सा कमाने में।

क्यों तुमने इतना गंवाया,
अपनों को छोड़ा,
गैरों को अपनाया,
इस तहखाने में।

आज पुरा जंगल है,
और तू ही शेर है,
एकांतवासी बन गया है,
बेबसी के आगे ढेर है।

सपना टूटा, आँख खुली,
जिंदगी अब कैद सी लगती है,
इस भौतिकी के पैमाने पे,
और आज व्यस्त हूँ मैं बहुत,
उन चार दीवारों को गिराने में।

वक्त लग रहा है मुझको,
मुझसे मेरी पहचान बताने में,
ढूँढ रहा हूँ उसी शख्स को,
रहता मस्त मग्न इस जमाने में।



दो बूँद



पंकज अरोड़ा

दो बूँद.....?

दो बूँद बारिश की आस।

किसान को दो बूँद की आस,
खेत को दो बूँद की प्यास,
एक आँसू है, एक पसीना,
दो बूँद बारिश की आस।

बीज को दो बूँद की प्यास,

फूल और फल बस दो बूँद की आस,
सुख व खुशी की आस,
दो बूँद बारिश की आस।

इंद्र की बारिश की आस,
सूखे को बारिश की आस,
बच्चे को दूध की प्यास,
बस दो बूँद बारिश की आस।

पोलियो में दो बूँद,
इलाज सिर्फ दो बूँद,
अमृत भी दो बूँद,
जहर भी दो बूँद,

बस दो बूँद बारिश की आस।

दो बूँद से अमरता,
दो बूँद से तबाही,
दो बूँद से दुनिया का नाश,
दो बूँद जिंदगी का नाम।

बस फिर क्या समझे?

समझदारी की दो बूँद,
नासमझी पर है भारी,
बस दो बूँद बारिश की आस।

उठो जागो और कर्म करो,
दो बूँद की आस,
टूटने मत दो।

पालो अमृत को,
जीत लो विश्व को,
ताकत है सिर्फ दो बूँद,
बस दो बूँद बारिश की आस।

सत्य और प्रेम का संदेश,
समझो और जानो,
विश्व को सचेत करो,
जियो और जीने दो।

दो बूँद की आस,
मिटने मत दो,
बस दो बूँद बारिश की आस।

मंत्र फूँककर,
विश्व विजेता बनो।
धर्म युद्ध जीतकर,
कल्याण पथ पर चल पड़ो।

आस सिर्फ दो बूँद,
दो बूँद जीवन के।

सुख व शांति बस दो बूँद,
दो बूँद बारिश की आस,
दो ही बूँद प्रेम की प्यास,
प्रेम की प्यास,
दो बूँद बारिश की आस.....।



उत्तर क्षेत्र आईए एवं एडी हॉकी टूर्नामेंट



:: रक्त दान शिविर वर्ष 2022 ::



:: बूस्टर डोज ::



:: महिला दिवस ::



कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम / गतिविधियाँ



1. अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 08.03.2022 को कार्यालय परिसर में “जेंडर इक्वेलिटी टुडे फॉर ए सस्टेनेबल टुमोरो” विषय के साथ मनाया गया।
2. इस कार्यालय द्वारा 02.04.2022 से 04.04.2022 तक नॉर्थ जोन आईए एंड एडी हॉकी टूर्नामेंट 2021-22 का आयोजन किया गया था जिसमें कुल 05 टीमों (कार्यालय महालेखाकार हिमाचल, कार्यालय महालेखाकार दिल्ली, कार्यालय महालेखाकार पंजाब, कार्यालय महालेखाकार हरियाणा और कार्यालय महालेखाकार प्रयागराज ने टूर्नामेंट में भाग लिया। कार्यालय महालेखाकार हरियाणा ने फाइनल में कार्यालय महालेखाकार दिल्ली टीम को हराकर टूर्नामेंट जीता।
3. कार्यालय परिसर में दिनांक 20.05.2022 को आतंकवाद विरोधी दिवस मनाया गया। कर्मचारियों ने अपनी सीट पर शपथ ली।
4. दिनांक 08.06.2022 को गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल सेक्टर-32, चंडीगढ़ के सहयोग से कार्यालय के अधिकारियों द्वारा अस्सी-अस्सी यूनिट रक्तदान किया गया।
5. सरकारी अस्पताल सेक्टर-16, चंडीगढ़ के सहयोग से दिनांक 29.07.2022 को कार्यालय परिसर में बूस्टर डोज टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया कुल 267 कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों ने बूस्टर डोज लगवाया।
6. 15 अगस्त, 2022 को कार्यालय परिसर में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। ध्वजारोहण समारोह का संचालन श्री विशाल बंसल, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, चंडीगढ़ द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ किया गया।
7. दिनांक 20.08.2022 को कार्यालय परिसर में सदभावना दिवस मनाया गया (दिनांक 18.08.2022 को अवकाश के कारण) कर्मचारियों ने अपनी सीट पर शपथ ली।

अग्रणी

वरि. लेखा अधिकारी (कल्याण)



भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग (सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाएँ रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा – हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंद!



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा, चण्डीगढ़

प्लॉट नं. 4-5, सैक्टर 33 बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़
www.aghry.nic.in

